ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 13, Issue 10, October 2023 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

प्रभा खेतान के साहित्य में आधुनिक काल में नारी की समस्याओं के विविध पहलुओं का अध्ययन

MOHAN LAL

RESEARCH SCHOLAR

DR. ASHISH KUMAR TIWARI

SUPERVISOR

SHRI KRISHNA UNIVERSITY, CHHATARPUR (M.P.)

सार

प्रभा खेतान आधुनिक काल की ऐसी लेखिका है, जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से नारी की समस्याओं के विविध पहलुओं को चित्रित करने का प्रयास किया है प्रभाजी प्रेमचंद की तरह यथार्थवादी लेखिका है। उन्होंने अपने साहित्य में भोगा हुआ यथार्थ प्रस्तुत किया है। इक्कीसवीं सदी के अंत में जागती हुई दुनिया के साथ नारी एवं दलित ने भी अपने हक को पहचानना शुरू किया और कलम थामी उसने अपना भोगा हुआ सच कागज पर उतारना शुरु किया। चूंकि उसके पास साहित्य का शिल्पगत मर्म नहीं था, मगर पीड़ाओं से भरा हुआ एक जीवन था। दमन झेलता हुआ जहाँ पूरा इतिहास था, वहीं साथ था इसी दमन के इर्द–गिर्द का वर्तमान । प्रभाजी ने केवल भोगा हुआ यथार्थ ही नहीं लिखा, बल्कि चिंतन जैसे दुरुए क्षेत्र में भी अपनी कलम की पहचान बनाई। भारतीय स्त्री की स्थिति के साथ–साथ प्रभा ने दूसरे देशों की स्त्री की यथास्थिति को वर्णित किया है।

कुंजीशब्द *साहित्य ए आधुनिक काल ए नारी ए समस्याओं ए विविध पहलुओं*

परिचय

प्रभा जी के आलोच्य उपन्यासों का शोधपरक अनुशीलन करते हुए उनमें प्रतिबिंबित नारी चेतना को रेखांकित करना शोधार्थी का अभीष्ट है। प्रभाजी के उपन्यासों का कथ्यपक्ष मनोवैज्ञानिक, वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक विचारधारा से अनुप्राणित है।

प्रभा खेतान आधुनिक काल में नारी की समस्याओं

प्रभा खेतान आधुनिक काल की ऐसी लेखिका है, जिन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से नारी

की समस्याओं के विविध पहलुओं को चित्रित करने का प्रयास किया है प्रभाजी प्रेमचंद की तरह यथार्थवादी लेखिका है। उन्होंने अपने साहित्य में भोगा हुआ यथार्थ प्रस्तुत किया है।

इक्कीसवीं सदी के अंत में जागती हुई दुनिया के साथ नारी एवं दलित ने भी अपने हक को पहचानना शुरू किया और कलम थामी उसने अपना भोगा हुआ सच कागज पर उतारना शुरु किया। चूंकि उसके पास साहित्य का शिल्पगत मर्म नहीं था, मगर पीड़ाओं से भरा हुआ एक जीवन था। दमन झेलता हुआ जहाँ पूरा इतिहास था, वहीं साथ था इसी दमन के इर्द–गिर्द का वर्तमान ।

प्रभाजी ने केवल भोगा हुआ यथार्थ ही नहीं लिखा, बल्कि चिंतन जैसे दुरुए क्षेत्र में भी अपनी कलम की पहचान बनाई। भारतीय स्त्री की स्थिति के साथ–साथ प्रभा ने दूसरे देशों की स्त्री की यथास्थिति को वर्णित किया है। उनके लेखन में एक मजदूर स्त्री से लेकर करोड़पति व्यवसायी स्त्री तक का उल्लेख हुआ है। साहित्य जगत् में अपना अविस्मरणीय स्थान बनाने के साथ ही नारी विमर्श की एक सशक्त स्तम्भ के रूप में भी प्रमा स्थापित हुई ।

इन सभी में नारी पात्र जिस प्रकार अपनी चेतना शक्ति कायम रखते हैं यह बताना मेरा अभीष्ट है । नारी सहज एवं कोमल तो है ही, विभिन्न परिस्थितियों के सामने वह अपने प्रकृतिदत स्वरूप के बलबूते ही जूझती है, संघर्ष करती है। प्रभा जी ने अपने उपन्यासों में अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, पारिवारिक विघटन, आर्थिक रुप से असफल, पुरुष की पाशविकता एवं शोषित, पीड़ित नारी की समस्या का चित्रण किया गया है। इन सभी पर प्रकाश डालना प्रस्तुत अध्याय का प्रतिपाद्य है ।

नारीवादी लेखिका प्रभा खेतान ने अपनी आत्मकथा श्अन्या से अनन्याश में इसी सन्दर्भ को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया हैरू ष्औरत के लिए केवल प्यार ही काफी नहीं। व्यक्ति बनाने के लिए उसे और भी बहुत कुछ चाहिए धन मान, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता सभी कुछ द्य जीवन शुरू करने के लिए उसे भी पुरुष के बराबर की जमीन चाहिए और इस जमीन को समाज से छीनकर लेना पड़ता है। महज अनुनय–विनय से काम नहीं चलता ।

आज कि खियाँ यों ही हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठना चाहती। वह आगे बढ़ना चाहती है। इसके लिए वह पार्वती की तरह तपस्या करके अपने जीवन की राह स्वयं चुनना चाहती है वह कभी अपने आपको कमजोर नही मानती। इसके बारे में प्रभाजी लिखती है– ष्आधुनिक स्त्री की तपस्या, पार्वती की तपस्या से भिन्न है। वह प्रार्थना करती है। उस प्रार्थना में वह सबकुछ माँगती है क्योंकि आज की पार्वती के लिए केवल पति ही काफी नहीं। पुरुष ने शिव के अलावा सत्य और सुन्दर को चाहा तो स्त्री क्यों नहीं अपने जीवन में इसकी माँग करे? स्त्री भी न्याय और औचित्य की माँग करेगी। इस नए सर्जित संसार में प्रगति का प्रशस्त मार्ग, घर की देहरी से निकलकर पृथ्वी के अनन्त छोर तक जाता है। स्त्री को यह समझना होगा ।

पुरुष प्रधान समाज यही सोचता हैं कि उन्होंने स्वी को एक सुरक्षा कवच दिया है। पर सही

मायने में स्त्री का जीवन बेडियों से जकड़ा हुआ है।

इस बारे में डॉ. कृष्णा जाखड लिखती है– ष्पुरुष ने हमेशा स्त्री को पिता, पति, पुत्र के रूप में सुरक्षा चक्र दिया है और समय–समय पर उसे सचेत करता आया है कि यदि यह सुरक्षा चक्र टूट गया तो तुम्हारा अस्तित्व भी खतरे में पड़ जाएगा । लेकिन सही मायने में देखें तो स्त्री को सबसे ज्यादा असुरक्षित इसी सुरक्षा चक्र ने बनाया है। जब कभी नारी ने इस घेरे को तोड़ने का प्रयास किया तो पुरुष ने उसे पीछे धकेलते हुए श्रद्धा रुपी बड़ा सा ब्रह्मास्त्र फेंककर बाहर के पुरुष का खतरा याद दिलाया। घर के बाहर का पुरुष मारने वाला, भीतर का तारने वाला और इसी उलझे हुए जाल में नारी पिसती रही वर्षो तक, सदियों तक ।

समाज के साथ संघर्ष करनेवाली नारी

ष्आओ पेपे, घर चलेंश का मुख्य नारी पात्र प्रभा है, जो इस उपन्यास की नायिका भी है। प्रभा उम्र शिक्षा हांसिल करने के बाद कॉलेज में नौकरी कर सादगीपूर्ण जीवन जीना नहीं चाहती। वह हमेशा संघर्ष करना चाहती। वह ढेर सारे रुपये कमाना चाहती है और आगे बढ़ना चाहती है। वह अपने ही मारवाड़ी समाज के साथ लड़ना चाहती है। प्रभा आर्थिक स्वतंत्रता को जीने की पहली शर्त मानती है। इतना ही नहीं प्रभा का यह भी मत हैं कि औरत को अपनी अस्तित्व की पहचान के लिए आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खड़ा होना आवश्यक है। पैसे की इसी प्रकार की चाह रखनेवाली प्रभा को देख उसकी बहन कहती हैरू ष्यह अचानक पैसे की इतनी हवस क्यों? मुझकों देखो मैं कम खर्च में सादगी से काम चला रही हूँ।ष इसके उत्तर में प्रभा का यह कथन द्रष्टव्य है– ष्आप चला सकती हैं, क्योंकि आप बंगाली समाज की हैं, जहाँ शिक्षा का सम्मान है और मैं? मैं उस समाज की हूँ जहाँ आदमी की एक ही विशेषता होती है वह वह लाख रुपये का आदमी है या करोड का ? 2 इस प्रकार प्रभा शिक्षा को महत्त्व न मानकर पैसों को महत्त्व देती है और इसी बात पर वह अपने ही समाज के साथ संघर्ष करती है। वह कहती है– ष्नहीं, मेरी लड़ाई इसी समाज से चलेगी। आप नहीं जानतीं, बहन जी औरत की सारी स्वतंत्रता उसके पैसे में निहित है।

निर्भीक एवं निडरता से जीनेवाली नारी

आओ पेपे, घर चलें उपन्यास की नायिका प्रभा नीडरता से जीनेवाली नारी के रूप में हमारे सामने आती है। वह नीडरता से ही मारवाड़ी समाज के साथ लड़ती है। वह हमेशा अपने देश में रहकर ही लड़ाई लड़ना चाहती है। प्रभा ब्युटी थेरापी का कोर्स करने विदेशी भूमि में केवल पैंतालिस डॉलर लेकर पहुँचती है, परंतु पैसों की कमी को पूरा करने के लिए वह कभी अपने स्वाभिमान को लज्जित नहीं होने देती । यह हर समय पैसा कमाने के लिए संघर्ष करती है और निर्भीकता से समस्याओं का सामना भी करती है।

विद्रोही नारी

प्रभा के लिए मरील ढेर सारे कपड़े लाती है। प्रभा को लगता है कि मरील ने उसके स्वाभिमान को चोट पहुँचाई है। वह मरील द्वारा दिये गये कपड़ों को उनके मुँह पर फेंकती है और क्रोध में आकर कहती हैं

तुम क्या सोचती हो मैं भिखमंगी हूँ? क्लारा ब्राउन के उतारे हुए कपड़े पहनूँगी? ग्रेटा गारबों से टिप लूंगी? मिसेज डी की सेक्रेटरी की महेरबानी पर पलूंगी? क्या समझा है तुम लोगों ने? रुपये का अवमूल्यन हो गया, विदेशी मुद्रा हमारे देश से नहीं आ पा रही, पर क्या मेरा कोई आत्मसम्मान नहीं है?'

अध्ययन के उद्देश्य

1) समाज के साथ संघर्ष करनेवाली नारी का अध्ययन
2) प्रभा खेतान आधुनिक काल में नारी की समस्याओं का अध्ययन

देश–प्रेम की भावना रखनेवाली नारी

प्रभा अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम भावना रखती है वह अमरीका की चकाचौंध भरी जीवन पद्धति, पार्टी में सुरासुंदरी और पानी की तरह बहते पैसों को देखकर कमी मोहित नहीं होती और ना की कभी अमरीका में बसने का विचार अपने मन में लाती है। वह अपने देश और अपनी जमीन को बेहद चाहती है। मरील प्रभा को अमरीका में बसकर साथ में बुटीक खोजने की बात कहती है वह मरील को स्पष्ट शब्दों कह देती है कि ष्तुम मुझे करोड़ों की दौलत भी दो तो भी विदेश की जमीन पर मैं नहीं रह सकती।

इस प्रकार आओ पेपे घर चलें की प्रभा एक ऐसा नारी चरित्र है, जो निलकता एवं नीडरता, विद्रोही, राष्ट्रप्रेम और स्वाभिमानी आदि रूपों में प्रकट होती है। वह अमरीका की बाह्य भौतिक सुविधाओं से आकर्षित नहीं होती पर अपने बलबूते अपने देश में रहकर ही जीवनयापन करना मुनासिफ मानती है।

प्रेम में असफल नारी

एलिजा का पति डॉ. डी. क्लारा ब्राउन के प्यार में पड़ता है और धीरे–धीरे वह उसकी ओर से मुँह मोड़कर क्लारा को अपनी प्रेयसी मानने लगता है। एलिजा अपने पति पर इतनी क्रोधित हो जाती हैं कि वह पति पर परखी गमन, मुआवजा, तलाक का चार्ज लगाकर उसके कैरियर को धूल में मिला देना चाहती है पर वह ऐसा कर नहीं पाती, क्योंकि वह जानती है कि, ऐसा करने से उसे डॉ. डी. का प्यार नहीं मिल पायेगा। एलिजा प्यार को एक उड़ता हुआ पक्षी मानती है, जो कमी अनंत आकाश की ओर उड़ने लगता है।

सहनशील नारी

एलिजा अपने पति से बेहद प्यार करती है। डॉ. डी. द्वारा ठुकराई जाने पर भी अपमान, वंचना, पीड़ा को सहते हुए गीली लकड़ी की तरह अंदर ही अंदर सुलगते रहती है, विरोध नहीं करती। आइलिन को माँ मानकर उसकी गोदी में सर रखकर अपनी पीड़ा को कम करनेवाली एलिजा उसके जाने पर कई डालर खर्च कर साइकियाट्रिस्ट के पास जाकर अपने मन को हल्का करती है हमेशा हृदय में दुःख का समंदर पालनेवाली एलिजा बाहर से बड़ी प्रसन्न है।

अंततः हम कह सकते हैं कि लेखिका ने एलिजा के माध्यम से उस अमरीकी नारी का चित्रण किया है, जो तमाम भौतिक सुविधाएँ होने के बावजूद भी त्रिशंकु जीवन जीने के लिए मजबूर है वह खुले दिल से अपने पति से प्रेम का एकरार नहीं करती। मन–ही–मन सुलगती रहती है। वह एक असफल नारी के रूप में हमारे सामने आती है।

प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली नारी

आइलिन के चरित्र को देखकर हर कोई स्तब्ध रह जाता था। उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व से हर मनुष्य उसकी ओर आकर्षित हो जाता था आइलिन के सन्दर्भ में प्रभा का कथन है– ष्पर कहीं उसके व्यक्तित्व में कुछ ऐसा था कि बुढ़िया किसी–न– किसी जगह चलते–चलते मुट्ठी भर बाबू सामने आने वालों की आँखों में झोके बिना नहीं मानती और इसके बाद पूरी मासूमियत से आँखों की पलके उठा बालू की किरकिराहट धोने बैठ जाती ।ष

सांस्कृतिक परिवेश से प्रभावित नारी

आओ पेपे, घर चलें उपन्यास की आइलिन तिज त्यौहारों से अत्यंत प्रभावित है । आइलिन पचीस दिसम्बर को प्रभा के साथ चर्च जाती है। इकतीस दिसंबर की रात इस धर्म में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। सभी अत्यंत उत्साह से सजते सेंवरते हैं। इसके बारे में लेखिका कहती है– श्इकतीस दिसम्बर को सुबह आइलिन ने सजना शुरु किया। उसने अपनी लटें अलग–अलग रंगों में रंगी। दसों उंगलियों के नाखूनों में दस रंग की नेल पालिश । इसी दिन डिजनी लैंड का वातावरण आनंददायी था रात के आठ बजे से पटाखों का शोर शुरु हुआ। मैंने अपनी जिन्दगी में ऐसी दिवाली नहीं देखी थी। घर लौटने पर रात के ग्यारह बज गए थे। नींद आ रहीं थी । आइलिन कहती हैरू "रात बारह बजे तक जागना है। नए साल का स्वागत करेंगे।ष

पैसों से दूर भागनेवाली नारी

आइलिन अपने जीवन में पैसों को महत्व नहीं देती पैसा उनके लिए कोई द्य मायने नहीं रखता। आइलिन का जीने का तरीका अलग है। वह जोन को भूल जाती है और रोजर से प्रेम करती है। प्रभा जी के ज्यादा नारी पात्र भले ही पैसों के पीछे भागता हो, लेकिन आइलिन को पैसों से कभी प्यार नहीं हुआ। वह मानती है कि ज्यादा पैसों से आदमी की समझदारी कम हो जाती है। वह अमरीका को रहने लायक द्यदेश नहीं मानती। क्योंकि वहाँ किसी के सीने में

दिल नाम की चीज नहीं है, खाली पैसों के पीछे अंधी दौड है।

नारी की दयनीय स्थिति से चिंतित नारी

आइलिन नारी के दुःख दर्द को अच्छी तरह जानती है। विघटित विदेशी जीवन मूल्यों से तिरस्कार एवं घृणा रखनेवाली आइलिन औरत जीवन से दुःखी होकर प्रभा से कहती है– ष्औरत जब अपना दिल एक खूंटे से बांध देती है, तब सारी जिंदगी रोती है, सारी जिंदगी। आइलिन औरत की स्थिति देख अत्यंत भावुक हो ष्औरत कहाँ नहीं रोती और कब नहीं रोती! वह जितना जाती है और कहती है कि भी रोती है, उतनी ही औरत होती जाती है।

निष्कर्ष के रूप में हम आइलिन के चरित्र के बारे में इतना ही कह सकते हैं कि आइलिन एक जिंदादिल औरत है वह मनुष्य की मानवता और उसके अंदर बैठी हैवानियत को अच्छी तरह पहचान लेती है। वह नारी की दयनीय स्थिति को भी प्रकट करती है।

स्वाभिमानी नारी

ष्छिन्नमस्ताश उपन्यास की नीना स्वाभिमानी नारी है। वह अपनी सहेलियों के सामने कभी पिता का जिक्र नहीं करती। वह कहती हैं कि, उनके पिता बचपन में ही मर गये। प्रिया जब नरेन्द्र से अलग हो जाती है और अपना व्यवसाय स्थापित करती है तब नीना उसका हाथ बँटाती है। वह प्रिया को समय आने पर जान देने के लिए। भी तैयार रहती है। वह हर मुसीबत में प्रिया का साथ देने के लिए तैयार है।

अंत में हम कह सकते हैं कि नीना एक ऐसी औरत हैं, जो नाजायज संतान की पीड़ा से उभरने के लिए हर तूफान का सामना करती है। साथ ही खुद की शक्ति पर विश्वास करती नजर आती है।

स्वावलंबी नारी

जुड़ी फिलिप की पत्नी एवं प्रिया की सहेली है। वह साइकियाट्रिस्ट हैं। होलैंड में रहनेवाली जुड़ी अपने पति को पति कम मित्र ज्यादा मानती है। जुड़ी स्वावलंबन को अपने जीवन में ज्यादा महत्व देती है वह अड़तालीस की होने के बाद भी अपनी जिन्दगी को एक सिलसिलेवार ढंग से सोच रही है जुड़ी क्लास लेने पचास मील रोज गाड़ी चलाकर जाती है जुड़ी का तौर तरीका बहुत मुलायम था।

जन्म से ही वह बुद्धि संपन्न नारी थी। बिना कुछ कहे वह सबकुछ समझ जाती है। छह कमरें वाले अपने मकान को जुड़ी खुद व्यवस्थित रखती है ।

नारी के दुःख एवं पीड़ा से परिचित नारी

जुड़ी नारी के दुःख दर्द एवं पीड़ा को अच्छी तरह समझती है वह प्रिया से कहती है– ष्नहीं, सारी भूमिकाओं से परे एक हमदर्द औरत हूँ औरत का दर्द समझती हूँ। प्रिया, क्या केवल तुम्हीं ने सहा है? एक तुम ही नहीं जो दुख पा रही हो, हर औरत के अपने–अपने दर्द के तहखाने हैं। वह औरत के दुःख–दर्द को अच्छी तरह जानती है। वह नारी की मूक अवस्था एवं उसका मीन तोड़ने के लिए प्रिया को डायरी लिखने की सलाह देती है प्रिया जब नरेन्द्र के बारे में शिकायत करती है, कि औरत को समाज सौ कोड़ा लगाता है और पुरुष को क्रांतिकारी मानकर मंच पर बिठाया जाता है तब जुड़ी कहती है– ष्औरत हर तरह मरती है। लेकिन रोती हुई और मुझे अच्छी नहीं लगती। मुझे औरत की इस निष्क्रियता पर झुंझलाहट होती है। यह क्या घुट–घुटकर मरना...?ष्

विश्वासपूर्ण जीवन जीनेवाली नारी

जुड़ी एक जिंदादिल औरत है उनके विचारों में विश्वास की कोई कमी नजर नहीं आती। वह अपने अस्तित्व की रक्षा खुद करना जानती। फिलिप और जुड़ी का रिश्ता मजबूत डोर से बंधा हुआ है। उसे अपने पति पर पूरा विश्वास है। वह कब किसके साथ बोलता है, जुड़ी इन बातों में ध्यान नहीं देती। फिलिप जब पहली बार एयरपोर्ट पर प्रिया से मिलता है तब उनका दाहिना गाल चुमते हुए कहता है– श्कैसी हो मेरी दोस्त? उस समय जुड़ी का प्रतिभाव क्या था? वह प्रिया कहती है– ष्मगर संकोच, तहजीब, हाँ सलीका, फिलिप के इस ब्रिटिश मैनरिज्म पर जुड़ी हमेशा हँसती है।

प्रिया को अपने आप के लिए जीना जुड़ी ही सिखाती है और वही उसके नाजुक क्षणों को सहलाती है।

निष्कर्ष

प्रभा उम्र शिक्षा हांसिल करने के बाद कॉलेज में नौकरी कर सादगीपूर्ण जीवन जीना नहीं चाहती। वह हमेशा संघर्ष करना चाहती। वह ढेर सारे रुपये कमाना चाहती है और आगे बढ़ना चाहती है। वह अपने ही मारवाड़ी समाज के साथ लड़ना चाहती है। प्रभा आर्थिक स्वतंत्रता को जीने की पहली शर्त मानती है। इक्कीसवीं सदी के अंत में जागती हुई दुनिया के साथ नारी एवं दलित ने भी अपने हक को पहचानना शुरू किया और कलम थामी उसने अपना भोगा हुआ सच कागज पर उतारना शुरु किया। चूंकि उसके पास साहित्य का शिल्पगत मर्म नहीं था, मगर पीड़ाओं से भरा हुआ एक जीवन था। दमन झेलता हुआ जहाँ पूरा इतिहास था, वहीं साथ था इसी दमन के इर्द–गिर्द का वर्तमान । प्रभाजी ने केवल भोगा हुआ यथार्थ ही नहीं लिखा, बल्कि चिंतन जैसे दुरुए क्षेत्र में भी अपनी कलम की पहचान बनाई। भारतीय स्त्री की स्थिति के साथ–साथ प्रभा ने दूसरे देशों की स्त्री की यथास्थिति को वर्णित किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

[1.] चरण सिंह आरबीआई चेयर प्रोफेसर, अर्थशास्त्र और सामाजिक विज्ञान, आईआईएम बैंगलोर; भारत में वृद्ध होती जनसंख्यारू चुनिंदा आर्थिक मुद्दे; वर्किंग पेपर नं. 442

[2.] चटर्जी, मोहिनी. नारीवाद और महिलाओं के मानवाधिकार. जयपुररू आविष्कार पब्लिशर्स, 2004।

[3.] चेर्निस, कैरी। ष्व्यक्तित्व और विचारधारारू महिलाओं की मुक्ति का एक व्यक्तिगत अध्ययन।ष मनोरोग 35.2 (1972)रू 109–25.

[4.] चेरी, केंद्र। —लिंग स्कीम सिद्धांत और संस्कृति में भूमिकाएँ।‖ वेरीवेल माइंड, 14 मार्च 2019।

[5.] चिटनिस, सुमा। ष्नारीवादरू भारतीय लोकाचार और भारतीय प्रतिबद्धता।ष भारतीय समाज में महिलाएँरू एक पाठक। नई दिल्लीरू सेज प्रकाशन, 1988।

[6.] कोहेन, योलान्डे। —महिलाओं और शक्ति पर विचार।‖ नारीवादरू दबाव से राजनीति तक। नई दिल्लीरू रावत प्रकाशन, 2002रू 355–57।

[7.] कूमी एस. वेवैना, —अफ्रोसेन्ट्रिक फेमिनिस्ट राइटिंग में चुनौतियाँ,‖पृ.220।

[8.] कॉट, नैन्सी एफ. आधुनिक नारीवाद का आधार। लंदनरू येल यूनिवर्सिटी प्रेस, 1987।

[9.] डी. एच. लॉरेंस, ष्द रेनबोष। लंदनरू पेंगुइन बुक्स, 1949, पृष्ठ 486–91। प्रिंट करें.

[10.] डैश, संध्यारानी, श्शफॉर्म एंड विजन इन द नॉवेल्स ऑफ अनीता देसाईश्श, नई दिल्ली, प्रेस्टीज बुक्स, 1999।

[11.] डेविड मैक. रेनॉल्ड्स, षहिस्पटर्स अनलीशेडष, सेमुर क्रिम में, संस्करण। द बीट्स ग्रीनविचरू फ़ॉ सेट्ट, 1960

[12.] देसाई, अनिता। इस गर्मी में हम कहां जाएं? नई दिल्लीरू ओरिएंट पेपरबैक्स, 2007।

[13.] देसाई, अनितारू —महिला लेखिका‖ क्वेस्ट, अप्रैल/जून 1970. पृष्ठ 65.

[14.] देसाई, नीरा और मीना ठाकुर। भारतीय महिलाएँरू अंतर्राष्ट्रीय दशक 1975–85 में

परिवर्तन और चुनौती। गाजियाबादरू विमल प्रकाशन, 1984.